इकाई- IV (Unit-IV)

वित्तीय प्रबंधन- महत्व, कार्य एवं भूमिका

(Finance Management – Importance, Functions and Role)

व्यवसाय में वित्त का स्थान जीवन रक्त (Life Blood) के समान हैं यह व्यवसाय का ऊर्जा स्रोत है, जो समस्त उत्पादन व विपणन गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करता है। व्यवसाय को ना केवल जीवित रखने वरन उसके निरंतर विस्तार एवं प्रगति के लिए वित्त एक आवश्यक शक्ति है। प्रो. व्हीलर लिखते हैं कि *"वित्त सम्पूर्ण व्यावसायिक क्रिया को एक सूत्र में बांधने वाला चमकीला धागा है। यह विपणन, उत्पादन, क्रय एवं सेवीवर्गीय प्रबंध को प्रभावित एवं परिसिमित करता है।"* प्रो मार्शल ने वित्त को संपूर्ण अर्थव्यवस्था की 'धुरी' माना है।

वित्तीय कार्य का अर्थ एवं परिभाषा
(Meaning and Definition of Finance Functions)

वित्तीय कार्य का अर्थ समय एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। इसमें अर्थ के संबंध में निम्न दो विचारधाराएं प्रचलित है।

1- परंपरागत विचारधारा (The Tradition Approach)

परंपरागत विचारधारा के अनुसार वित्तीय कार्य का अर्थ **'कोषों की प्राप्ति एवं प्रबंध' (Procurement and Management of Funds)** से लिया जाता है। प्राचीन समय में व्यवसाय का दैनिक संचालन ही प्रमुख कार्य था ; व्यवसाय के पुनर्गठन, विस्तार, प्रगति व नवप्रवर्तन की समस्याएं विद्यमान नहीं थी। इसलिए वित्तीय प्रबंधक का उत्तरदायित्व केवल विभिन्न स्रोतों से पूंजी प्राप्त करने, दैनिक खर्चे का निर्णय लेने तथा उसका उचित हिसाब रखने तक ही सीमित था। इस दृष्टिकोण की कुछ परिभाषाएं इस प्रकार हैं–

पैश (F.W. Paish) के अनुसार *"आवश्यकता के समय वित्त की व्यवस्था करना ही वित्त का कार्य है।"*

होवार्ड एवं अपटोन के शब्दों में *"व्यावसायिक वित्त किसी संगठन में वह प्रशासकीय कार्य है जिसका संबंध नकद या साख की व्यवस्था करने से हैं।"*

इस विचारधारा की प्रमुख विशेषताएं अग्रलिखित है–

1- यह संकुचित एवं एक-पक्षीय विचारधारा है जो केवल कोषों की प्राप्ति पर ही बल देती है, उनके विवेकपूर्ण नियोजन, आबंटन एवं उपयोग पर नहीं।

2- यह विचारधारा वित्तीय कार्य को व्यवसाय का एक अनियमित कार्य मानती है जो व्यवसाय की केवल आकस्मिक आवश्यकताओं से संबंधित होता है।

3- यह विचारधारा व्यवसाय की अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकताओं पर ध्यान नहीं देती है। यह कार्यशील पूंजी के प्रबंध की उपेक्षा करती है।

4- यह विचारधारा उच्च प्रबंधकीय एवं व्यूहरचना संबंधी निर्णय में वित्तीय प्रबंधक की भूमिका को महत्वपूर्ण नहीं मानती है।

5- यह आंतरिक पूंजी प्रबंधन की अपेक्षा विनियोकताओ का मार्गदर्शन करने पर ज्यादा जोर देती है।

6- इस दृष्टिकोण में अनुभव व अंतर्ज्ञान के आधार पर वित्तीय निर्णय लिए जाते हैं वैज्ञानिक विधि से नहीं।

2- आधुनिक विचारधारा (The Morden Approach)

व्यवसाय के बदलते हुए स्वरूप, भीषण प्रतिस्पर्धा, विश्वव्यापी बाजारों, तकनीकी प्रगति, आर्थिक व सामाजिक परिवर्तनों, नवप्रवर्तन की प्रवृत्ति आदि कारणों के फलस्वरुप वित्तीय क्षेत्र एवं स्वरूप में तेजी से परिवर्तन हुआ है। वर्तमान में वित्त का कार्यक्षेत्र एवं ढांचा अत्यंत व्यापक एवं गतिशील हो गया है। अतः वित्त की आधुनिक विचारधारा वित्तीय नियोजन, प्रभावशाली वित्त निर्णयन, पूंजी के मितव्ययितापूर्ण उपयोग, आय प्रबंधन एवं पूंजी के विवेकपूर्ण विनियोजन पर पूर्ण ध्यान देती है। इस विचारधारा के अनुसार आधुनिक व्यवसाय में पूंजी बजटिंग, पूंजी लागत, वित्तीय नियंत्रण, वित्तीय मापदंडों, कार्यशील पूंजी के प्रबंध, वित्तीय नियोजन व विनियोग मूल्यांकन का अत्यंत महत्व बढ़ गया है। इसका उद्देश्य व्यवसाय के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पूंजी प्राप्ति से लेकर उसके प्रभावपूर्ण उपयोग, नियोजन, विनियोग एवं नियंत्रण से है।

आधुनिक विचारधारा की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं --

1- यह विचारधारा व्यापक, समग्र एवं विवेकपूर्ण है।

2- यह वित्तीय कार्य को एक नियमित, सतत एवं महत्वपूर्ण कार्य मानती है।

3- इस विचारधारा के अनुसार नीति निर्धारण एवं नियोजन में वित्तीय प्रबंध की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा उच्च प्रबंध का वह एक अभिन्न होता है।

4- यह विचारधारा वित्तीय क्षेत्र में वैज्ञानिक विश्लेषण पद्धतियों का प्रयोग करती हैं।

5- यह उपक्रम की सभी अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन आवश्यकताओं पर विचार करती है।

6- यह बाह्य वातावरण के संदर्भ में व्यवसाय के आंतरिक प्रबंध पर जोर देती है।

7- यह सुदृढ़ वित्तीय प्रबंध को व्यवसाय की सफलता का आधार मानती है।

वित्तीय प्रबंध का अर्थ एवं परिभाषा

(Meaning and Definition of Financial Management)

वित्तीय प्रबंध व्यवसाय प्रबंध की वह शाखा है जो वित्त की प्राप्ति, नियोजन, आबंटन, प्रभावी उपयोग एवं नियंत्रण से संबंध रखती है। इसके अंतर्गत पूंजी नियोजन व बजटिंग पूँजी लागत, आय प्रबंध, रोकड़ प्रवाह, कार्यशील पूँजी प्रबंधन, कोष नियोजन, वित्तीय मामलों के निर्धारण, वित्तीय नियंत्रण आदि कार्यों को सम्मिलित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, वित्तीय प्रबंध- **1.** वित्तीय आवश्कताओं का पूर्वानुमान एवं नियाजन करने **2.** पूँजी ढांचे का निर्माण करने , तथा **3.** पूँजी पर प्रभावी नियंत्रण एवं प्रशासन से संबंधित है। वित्तीय प्रबंध की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्न प्रकार हैं –

व्हीलर के अनुसार *"वित्तीय प्रबंध का आशय उन क्रियाओं से होता है, जो उपक्रम के उद्देश्य एवं वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कोषों के संग्रहण एवं उनके प्रशासन से संबंध रखती है।"*

जे. एल. मेसी के अनुसार - *"वित्तीय प्रबंध व्यवसाय की वह क्रियात्मक प्रक्रिया है, जो उपक्रम के कुशलतापूर्वक संचालन के लिए आवश्यक वित्त की प्राप्ति एवं उनके प्रभावशाली उपयोग हेतु उत्तरदायी होती है।"*

वेस्टर्न एवं ब्राइगम के शब्दों में- *"वित्तीय प्रबंध वित्तीय निर्णय लेने का वह क्षेत्र है जो व्यक्तिगत उद्देश्यों एवं संस्था के लक्ष्यों में तालमेल स्थापित करता है।"*

जोसेफ ऐफ. ब्रेडले के अनुसार- *"वित्तीय प्रबंध व्यवसायिक प्रबंध का वह क्षेत्र है, जिसका संबंध पूंजी के विवेकपूर्ण उपयोग एवं वित्त के स्रोतों व साधनों के सतर्कतापूर्ण चयन से है, ताकि व्यवसाय को इसके उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में निर्देशित किया जा सके।"*

होवार्ड एवं उपटन के शब्दों में- *" वित्तीय प्रबंध नियोजन तथा नियंत्रण को वित्त कार्य पर लागू करना है।"*

फिलीपाटोज के अनुसार- *"वित्तीय प्रबंध का संबंध उन सभी प्रबंधकीय निर्णयों से होता है जिसके परिणामस्वरुप उपक्रम की दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कोषों की प्राप्ति होती है। इन निर्णयों का विश्लेषण कोषों की प्राप्ति, भुगतान एवं इनका प्रबंधकीय उद्देश्यों पर पड़ने वाले प्रभाव पर निर्भर करता है।"*

निष्कर्ष-- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वित्तीय प्रबंध व्यावसायिक प्रबंध की वह शाखा है, जिसके अंतर्गत व्यवसाय की समस्त वित्तीय क्रियाओं का नियोजन, आवंटन एवं नियंत्रण किया जाता है, ताकि वित्तीय कार्य का प्रभावशाली एवं कुशल संचालन संभव हो सके।

वित्तीय प्रबंध की विशेषताएं

(Characteristics of Financial Management)

1- **व्यावसायिक प्रबंध की शाखा** (A Branch of Business Management)–'वित्तीय प्रबंध' व्यावसायिक प्रबंध की एक क्रियात्मक शाखा है जो वित्त के प्रभावी नियोजन, संगठन, समन्वय एवं नियंत्रण से संबंध रखती है। यह सामान्य प्रबंध का एक आवश्यक भाग है, जिस पर संपूर्ण व्यवसाय की सफलता निर्भर करती है।

2- **प्रबंधीय निर्णयन का सार** (Essence of Managerial Decision Making) 'वित्तीय प्रबंध' समस्त प्रबंधीय निर्णयों को गहन रूप से प्रभावित करता है। वित्त निर्णयन का केंद्रीय बिंदु होता है। आधुनिक व्यवसाय के समस्त निर्णय वित्त के चारों ओर केंद्रित होते हैं। प्रबंध के प्रत्येक क्षेत्र- उत्पादन, विक्रय, कर्मचारी अनुसंधान, विकास आदि में लिए जाने वाले निर्णयों का आधार **वित्त** ही होता है।

3- **संगठन संरचना में महत्वपूर्ण स्थिति** (Important Position in Organization Structure) आधुनिक व्यवसाय में वित्तीय प्रबंध कि संगठन संरचना में एक महत्वपूर्ण स्थिति होती है। वित्तीय प्रबंधक उच्च प्रबंधकों का सलाहकार एवं पथ प्रदर्शक होता है तथा उपक्रम के महत्वपूर्ण निर्णयों एवं योजनाओं में उसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

4- **विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति** (Analytical Attitudes) आधुनिक वित्तीय प्रबंध की प्रवृत्ति विश्लेषणात्मक हो गई है। **प्रो कोहेन एवं रोबिंस** के अनुसार *'' यह कला एवं विज्ञान दोनों है तथा यह वित्तीय विश्लेषण की तकनीकों, वित्तीय आंकड़ों के वैज्ञानिक विश्लेषण व परिणामों की उचित समीक्षा पर जोर देता है।''*

5- **सतत प्रशासनिक कार्य** (Continuous Administration Functions)- प्राचीन समय में वित्त कभी-कभी उत्पन्न होने वाला कार्य था। किंतु आधुनिक व्यवसाय की समस्त शक्ति **वित्त** ही है। प्रतिस्पर्धा एवं नवप्रवर्तन के युग में वित्त की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। अतः व्यवसाय के सफल संचालन एवं विकास के लिए वित्तीय प्रबंध एक निरंतर प्रशासनिक कार्य बन गया है।

6- **केंद्रीयकृत प्रवृत्ति** (Centralized Nature) व्यवसाय में समस्त वित्तीय क्रियाएं समन्वित एवं नियंत्रित रूप में संपन्न की जाती हैं। समस्त वित्तीय निर्णय के अधिकार भी संगठन में केंद्रीयकृत होते हैं। **जैक ओ वैंस** के अनुसार– *''आधुनिक औद्योगिक उपक्रम में विपणन एवं*

उत्पादन के कार्यों का तो विकेंद्रीकरण संभव है, किंतु वित्तीय समन्वय एवं नियंत्रण की स्थिति केंद्रीयकरण के द्वारा ही स्थापित की जा सकती है।''

7- **प्रबंधीय प्रक्रिया का आधार** (A Basis of Managerial Process) वित्तीय प्रबंध संपूर्ण प्रबंधीय प्रक्रिया- अर्थात नियोजन, समन्वय एवं नियंत्रण का आधार है। वित्तीय पूर्वानुमानों के द्वारा ही सुदृढ़ योजनाएं बनाई जाती हैं, वित्त ही उपक्रम की समस्त गतिविधियों को आपस में बांधता है तथा **वित्त** ही समस्त क्रियाओं के नियंत्रण का महत्वपूर्ण उपकरण है।

8- **कार्य निष्पादन का मापदंड** (A Measure are of Performance)-- वित्त व्यवसाय का साधन व साध्य दोनों हैं। व्यवसाय का वास्तविक मूल्य उसमें निहित जोखिम एवं उसकी लाभदायकता के आधार पर ही निर्धारित होता है। **वेस्टन एवं ब्राइगम** लिखते हैं कि, *''वित्तीय निर्णय लाभदेयता एवं संस्था की जोखिम दोनों को प्रभावित करते हैं।''*

इस प्रकार वित्तीय प्रबंध जोखिम व लाभदेयता दोनों विरोधी घटकों में उचित संतुलन भी स्थापित करता है।

9- **व्यापक कार्य क्षेत्र** (Wide Scope) -- उत्पादन, विक्रय, क्रय, जनसंपर्क, अनुसंधान व विस्तार आदि सभी क्षेत्रों में वित्तीय विश्लेषण महत्वपूर्ण हो जाने के फलस्वरूप वित्तीय प्रबंध का क्षेत्र व्यापक हो गया है। इसके अतिरिक्त, यह कार्य अब पूंजी प्राप्ति तक ही सीमित नहीं वरन् वित्तीय नियोजन, पूंजी, लागत अनुमान, आय एवं विनियोग प्रबंध, वित्तीय नियंत्रण, बजटिंग, मूल्य निर्धारण आदि कार्यों तक विस्तृत हो गया है।

10- **अंतर्विषयक दृष्टिकोण**(Inter-disciplinary Approach)-- वित्तीय प्रबंध की तकनीकों एवं सिद्धांतों के विकास में अर्थशास्त्र, गणित, सांख्यिकी, लेखा एवं अन्य व्यवहार विज्ञानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस प्रकार वित्तीय प्रबंध एक अंतर्विषयक दृष्टिकोण है।

वित्तीय प्रबंध के उद्देश्य

(Objectives of Financial Management)

वित्तीय प्रबंध का मुख्य उद्देश्य वित्तीय योजनाओं, निर्णयो, नीतियों व कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन एवं नियंत्रण के द्वारा उपक्रम के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति में सहयोग करना है। विशिष्ट रूप से, वित्तीय प्रबंध के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैं –

1. पर्याप्त मात्रा में **कोषों की व्यवस्था** करना।
2. **पूंजी लागत** का अनुमान एवं निर्धारण करना।
3. **कोषों** का उचित **आबंटन एवं अनुकूलतम** उपयोग करना।
4. लोचशील **पूंजी ढांचे का निर्माण** करना।
5. उपक्रम द्वारा **लाभार्जन एवं संपत्तियों की मूल्य वृद्धि** में सहयोग करना।
6. उपक्रम की वित्तीय आवश्यकताओं के आधार पर **वित्तीय नियोजन** करना।
7. **प्रतिभूतियों एवं विनियोगो** के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय लेना।
8. **पूंजी के वैकल्पिक उपयोगों** का निर्धारण एवं मूल्यांकन करना।
9. **कार्यशील पूंजी** का प्रबंध करना।
10. **चल-अचल संपत्तियों, दायित्वों, आय, रोकड़, साख** आदि का उचित प्रबंध करना। our
11. **लाभांश वितरण, लाभ सहभागिता, मूल्य निर्धारण, कोष निर्माण** संबंधी निर्णय।
12. **बजट निर्माण** करना।
13. **करों का निर्धारण** करना एवं **समय पर भुगतान** करना।
14. दैनिक **वित्तीय व्यवहार, लेखाकर्म, अंकेक्षण, वित्तीय मूल्यांकन** आदि क्रियाओं को संपन्न करना ।
15. **वित्तीय सामंजस्य** बनाए रखना।
16. **वित्तीय विवरणों एवं अभिलेखों** को सुरक्षित रखना।
17. अंशधारियों, विनियोक्ताओ, ऋणदाताओं, वित्तीय संस्थाओं व सरकार से **जन संपर्क** बनाए रखना।

वित्तीय प्रबंध / प्रबंधक के कार्य

(Scope of Financial Management / Manager)

अथवा

वित्तीय प्रबंध का क्षेत्र

(Scope of there Financial Management)

वित्तीय प्रबंध का कार्य क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। वित्त प्रबंधक के कार्यों का विद्वानों ने पृथक- पृथक रूप से वर्णन किया है। इन्हें निम्न तीन श्रेणियों में बाँटकर अध्ययन किया जा सकता है।

I. प्रशासनिक कार्य
II. क्रियात्मक कार्य, एवं
III. दैनिक कार्य।

1. **प्रशासनिक कार्य (Administatiton Funtion)**-- वित्तीय प्रबंध के प्रशासकीय कार्य **निर्णयात्मक** होते हैं। इनके द्वारा वित्तीय प्रबंधक उपक्रम की वित्तीय आवश्यकताओं का पूर्वानुमान, नियोजन, समन्वय एवं नियंत्रण करता है। इन कार्यों के निष्पादन हेतु वित्तीय प्रबंधक में उच्च स्तरीय ज्ञान एवं अनुभव का होना आवश्यक होता है। प्रमुख प्रशासकीय कार्य निम्नलिखित है –

1- वित्तीय पूर्वानुमान (Financial Forecasting) -- वित्तीय प्रबंध को अपने उपक्रम में लक्ष्यों, विकास योजनाओं एवं कार्य की प्रकृति के अनुरूप वित्तीय आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाना होता है। अति पूंजीकरण अथवा अल्प पूंजीकरण की स्थिति बनी रहने से उपक्रम की सफलता संदिग्ध हो जाती है। सही वित्तीय पूर्वानुमान के द्वारा विनियोजित पूंजी पर उचित प्रत्याय प्राप्त किया जा सकता है तथा लाभ नियोजन को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

2- **वित्तीय नियोजन** (Financial Planning)-- वित्तीय पूर्वानुमानों के आधार पर वित्तीय प्रबंध वित्तीय नियोजन का कार्य करता है। इसके अंतर्गत पूंजी की मात्रा व अवधि, वित्त श्रोत, ऋण-अंश पूंजी अनुपात, लेखांकन का प्रारूप, अंकेक्षण व्यवस्था आदि के संबंध में निर्णय ले जाते हैं। वित्तीय नियोजन में उपक्रम के वित्तीय उद्देश्यों, नीतियों, कार्यक्रमों, बजट व कार्य विधियों का निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार वित्तीय नियोजन में संस्था के वित्तीय लक्ष्यों, साधनों व नीतियों का अग्रिम निर्धारण हो जाता है।

3- **वित्तीय क्रियाओं का संगठन (Orgenisation of Financial Activities)** वित्तीय क्रियाओं के कुशल निष्पादन के लिए एक सुदृढ़ संगठन का होना आवश्यक होता है। अतः वित्त प्रबंधक को इस संबंध में कई महत्वपूर्ण कार्य करने होते हैं, जैसे-- विभिन्न अनुभागों की स्थापना करना, विभिन्न पदों का सृजन करना, विभिन्न अधिकारियों के अधिकारों, दायित्वो व संबंधों को परिभाषित करना, वित्तीय कार्यों का वर्गीकरण एवं प्रत्यायोजन करना आदि। वित्त विभाग (योग्य कर्मचारियों लेखाकार रोकडिया, लेखा लिपिक, सहायक वित्त अधिकारी) आदि की भर्ती एवं चयन का कार्य भी करता हैं।

4- **अन्य विभागों से समन्वय (Coordination with other Departments)** वित्त कार्य उपक्रम की प्रत्येक क्रिया को प्रभावित करता है। सुदृढ वित्त योजनाओं पर ही अन्य विभागों की सफलता निर्भर करती है। अतः वित्त प्रबंध विभिन्न विभागों की क्रियाओं एवं योजनाओं में पारस्परिक सामंजस्य बनाए रखता है। इस संबंध में वह वित्तीय समंको, बजटों, विवरणों विभागीय संप्रेषण का प्रयोग करता हैं।

5- **वित्तीय नियंत्रण (Financial Control)** इसके अंतर्गत वित्त प्रबंध निर्धारित कार्य प्रमापों के अनुरूप वित्तीय प्रगति का समय- समय पर मूल्यांकन करता है एवं विचलन ज्ञात करके आवश्यक सुधारात्मक कार्यवाही करता है। वित्तीय नियंत्रण के द्वारा संबंधित कर्मचारियों को

आवश्यक निर्देश एवं नेतृत्व प्रदान किया जा सकता है। नियंत्रण हेतु वित्त प्रबंधक बजट, वित्तीय प्रतिवेदन, वित्त लागत विश्लेषण, प्रबंधीय लेखांकन आदि तकनीकों को प्रयोग में लाता है।

2- **क्रियात्मक कार्य (Executive Function)** वित्त प्रबंधक को अपने निर्णयो एवं योजनाओं के क्रियान्वयन का दायित्व भी निभाना होता है। अतः उसे कई क्रियात्मक कार्य भी करने होते हैं, जिसमें प्रमुख निम्नलिखित हैं,

1- **वित्त व्यवस्था (Procurement of Funds)-** वित्त प्रबंधक को निर्धारित पूंजी की मात्रा एवं संरचना के अनुसार विभिन्न स्रोतों से पूंजी का संग्रहण करना होता है। अतः वह विभिन्न वित्तीय स्रोतों व संस्थाओं से संपर्क करता है तथा वित्तीय अनुबंध करके पूंजी प्राप्त करने की कार्यवाही को आगे बढ़ाता है। इसके अंतर्गत अंशपत्रों व ऋणपत्रों का निर्गमन, अभीगोपकों की नियुक्ति, बैंकों से संपर्क आदि कार्य भी शामिल है। वित्त प्रबंधक पूंजी व मुद्रा बाजार की स्थिति पर विचार करके अनुकूलतम शर्तों का निर्धारण करता है।

2- **कोषों का आबंटन (Allocation of Funds)--** वित्त प्रबंधक का अगला महत्वपूर्ण कार्यक्रम की विभिन्न क्रियाओं हेतु कोषों का आवंटन करना होता है। इस हेतु वह विभिन्न कार्यों की आवश्यकता एवं लाभदायकता पर विचार करता है तथा उनका पारस्परिक मूल्यांकन करता है।

3- **संपत्तियों का प्रबंध (Management of Assets)** -- इसके अंतर्गत वित्त प्रबंधक स्थाई व चालू संपत्तियों की खरीद, इनके सुरक्षा उपाय, ह्रास की व्यवस्था एवं प्रतिस्थापन, अनुकूलतम विनियोग आदि घटकों पर विचार करता है। इसके अतिरिक्त, वह चालू संपत्तियों के प्रबंधन हेतु विशिष्ट नीतियों, उनकी तरलता व लाभदायकता, रोकड़ प्राप्ति व भुगतान आदि के बारे में भी निर्णय लेता है।

4- **आय का प्रबंध (Management of Income)** आय का उचित निर्धारण एवं वितरण करना भी वित्त प्रबंधक का एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसके अंतर्गत वह उचित लाभांश, बोनस, वेतन, ब्याज व करों के भुगतान आदि की व्यवस्था करता है।

5- **वित्तीय निर्माण (Financial Decisions)-** विभिन्न महत्वपूर्ण विनिर्माण लेना वित्त प्रबंधक का एक प्रमुख दायित्व है जेम्स सी. विहान के अनुसार वित्त प्रबंधक के निम्न निर्णय लेने होते हैं:

I. **विनियोग निर्णय (Investment Decisions)--** यह विभिन्न संपत्तियों एवं परियोजना में धन के विनियोजन से संबंधित होते हैं। इसमें वैकल्पिक विनियोगों की लाभदायक एवं तरलता पर विचार किया जाता है। इसमें पूंजी बजटिंग व कार्यशील पूंजी का प्रबंध भी शामिल है।

II. **पूंजी निर्णय (Capital Decisions)** इसके अंतर्गत उपक्रम की वर्तमान व भावी वित्तीय आवश्यकताओं पर विचार किया जाता है। वित्त प्रबंधक पूंजी की मात्रा, अवधि, स्रोत व साधन, पूंजी संरचना, विकास आवश्यकता आदि के संबंध में निर्णय लेते हैं।

III. **लाभांश निर्णय (Dividend Decisions)--** लाभांश निर्णयों में वित्त प्रबंधक अंश धारियों को वितरित किए जाने वाले लाभांश व बोनस पर विचार करता है साथ ही, वह संचित कोषों की मात्रा वह पुनर्विनियोग हेतु कोषों के निर्माण पर भी विचार करता है।

6- **लाभ नियोजन (Profit Planning) --** उपक्रम में लाभों में वृद्धि करने हेतु वित्त प्रबंधक **लाभ नियोजन** का कार्य भी करता है। वह संस्था की संपत्तियों की लाभदायक ता को बनाए रखने तथा उनके मूल्य में वृद्धि करने के लिए उनके कार्य करता है, जैसे - उचित मूल्य निर्धारण,

लागत नियंत्रण, लाभों का पूर्वानुमान, विक्रय विश्लेषण आदि। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में लाभ नियोजन का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है।

7- **रोकड़ प्रबंध (Management of Cash)** - रोकड़ आगमन एवं रोकड़ निर्गमन का उचित प्रबंध करना भी वित्त प्रबंधक का एक आवश्यक कार्य है इसमें रोकड़ प्रवाह का अनुमान लगाना व उसे नियंत्रित करना सम्मिलित है इसके लिए रोकड़ बजट व रोकड़ प्रतिवेदन प्रयोग में लाए जाते हैं। रोकड़ प्रबंध में उपक्रम की तरलता एवं शोधन क्षमता को बनाए रखा जा सकता है।

8- **पूंजी उत्पादकता में विद्धि (To Increase the Productivity of Capital)--** वित्त प्रबंधक उपक्रम के कोषों का अनुकूलतम उपयोग करके पूंजी की उत्पादकता को बढ़ाता है। इसके लिए वह विनियोग के नए-नए अवसरों की खोज करने के अतिरिक्त अनुकूलतम पूंजी संरचना एवं पूंजी लागत नियंत्रण पर भी ध्यान देता है।

9- **वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण एवं मूल्यांकन (Analysis and Evaluation of Financial Performance)** -- वित्तीय प्रबंधक का यह अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है कि वह वित्तीय क्रियाओं का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करके वित्तीय त्रुटियों हेतु सुधारात्मक कार्यवाही करें। इस हेतु वह अंतर-वर्ष तुलना तथा अंतर-फर्म तुलना के साथ-साथ विभिन्न तकनीकों, जैसे-- प्रवृत्ति विश्लेषण, अनुपात विश्लेषण, लागत-लाभ मात्र विश्लेषण, रोकड़ विश्लेषण आदि का प्रयोग करता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न वित्तीय विवरणों-- कार्यशील पूंजी विवरण, कोष विवरण, रोकड़ विवरण, लाभ-हानि खाता एवं स्थिति विवरण आदि का प्रयोग भी किया जाता है।

10- **उच्च प्रबंधकों को परामर्श (Advice to Top Management)** -- वित्तीय प्रबंधक संचालक मंडल को वित्तीय मामलों में बहुमूल्य परामर्श प्रदान करता है। वह विभिन्न वित्तीय योजनाओं एवं क्रियाओं का विश्लेषण करके उच्च प्रबंधकों को अपने सुझाव प्रस्तुत करता है। वित्तीय

प्रबंधक के परामर्श के आधार पर उच्च प्रबंधन अपने निर्णयों, नीतियों एवं योजनाओं में आवश्यक सुधार करते हैं।

3- दैनिक कार्य (Routine Functions): वित्त विभाग दिन प्रतिदिन के कार्यों से संबंधित अनेक वित्तीय कार्य भी निष्पादित करता है। यह कार्य वित्त अधीनस्थ कर्मचारियों लेखापाल, रोकडिया, लेखा लिपिक आदि द्वारा संपन्न किए जाते हैं। इसके अंतर्गत सम्मिलित कार्य निम्नलिखित हैं:--

1) विभिन्न वित्तीय लेखें करना।

2) विभिन्न वित्तीय विवरण तैयार करना।

3) रोकड़ प्राप्ति व भुगतान का प्रबंध करना।

4) बजट बनाना।

5) वित्तीय प्रपत्रों, संपत्तियों, विनिमय पत्रों व अभिलेखों को सुरक्षित करना।

6) साख प्रबंध करना।

7) वित्तीय समंको व सूचनाओं का संकलन करना।

8) विभिन्न दायित्वों का करों का निर्धारण व भुगतान करना।

9) आंतरिक व बाह्य अंकेक्षण की व्यवस्था करना।

10) अतिरिक्त पूंजी की व्यवस्था करना।

वित्तीय प्रबंधक का महत्व

(Importance of financial management)

वित्त व्यवसाय का मूल आधार है। इसके अभाव में व्यवसाय की रक्षा एवं प्रगति असंभव है। पूंजी उपक्रम एक दुर्लभ साधन बनाती जा रही है। व्यवसाय में बढ़ती हुई प्रतियोगिता, सदाचार की प्रवृत्ति, स्कंध बाजारों के विकास, विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं की सक्रिय भूमिका, सरकारी हस्तक्षेप, लोक उद्योगों के विस्तार आदि घटकों ने **वित्त** को व्यवसाय की समस्त क्रियाओं की घूरी बना दिया है। आज व्यवसाय के सभी क्षेत्रों- उद्योग, बीमा, बैंकिंग, परिवहन, विज्ञापन आदि के वित्त का महत्व बढ़ रहा है। प्रत्येक लाभकारी एवं अलाभकारी संस्थाओं में वित्तीय नियोजन एवं निर्णयन आवश्यक हो गया है। वित्तीय प्रबंधक के माध्यम को निम्न शिक्षकों में दर्शाया जा सकता है:-

1. **लक्ष्य प्राप्ति में सहायक (Helpful in Goal Achievement) --** कुशल वित्तीय नियोजन एवं निर्णयों के द्वारा व्यवसाय के लाभों , विनियोग एवं संपत्तियों के मूल्य में वृद्धि की जा सकती है। इस प्रकार वित्तीय के प्रबंध के उपक्रम में उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होता हैं।
2. **साधनों का अधिकतम उपयोग (Maximum Use of Resources)** वित्त के अभाव में उपक्रम के विभिन्न साधनों-- यंत्रों , कच्चा माल, मानवीय कौशल का अधिकतम विदोहन एवं उपयोग करना संभव नहीं है। **पूंजी** के द्वारा साधनों की उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। पूंजी के द्वारा आवश्यक निर्देशन, प्रशिक्षण एवं सुविधाएं उपलब्ध करवा करके मानवीय एवं तकनीकी क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।
3. **मितव्ययिता पूर्ण संचालन (Economical Operations)** कुशल वित्तीय योजनाओं का निर्माण करके संस्ता एवं आसान शर्तों पर वित्त प्राप्त किया जा सकता है तथा पूंजी की लागत में कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनुकूलतम वित्तीय संरचना के द्वारा व्यवसाय का मितव्ययिता पूर्ण संचालन किया जा सकता है।
4. **अस्तित्व रक्षा एवं विकास (Essential for Survival and Growth)--** पूंजी के अभाव में सुदृढ़ व्यवसाय की धाराशायी हो जाते हैं। अनार्थिक इकाइयों का मूल कारण, दोषपूर्ण वित्तीय प्रबंध ही है। पूंजी के द्वारा व्यवसाय के विकास एवं विस्तार की योजनाएं बनाई जा सकती है। वस्तुतः वित्त व्यवसाय के अस्तित्व एवं विकास का बीमा है।

5. **अनियमितताओं पर रोक (Check on Irregularities)-** वित्तीय प्रबंधक का उपक्रम एक विनियामक अंक है यह अपने विभिन्न विद्युत उपकरणों जैसे वित्तीय विश्लेषण का मास्टरी नियंत्रण, लेखा एवं अंकेक्षण के द्वारा वित्तीय अनियमितताओं पर रोक लगाता है वित्तीय नियोजन एवं मूल्यांकन द्वारा विश्व दोषों को दूर किया जा सकता है।

6. **सफलता की कुंजी (Key of Success)** व्यवसाय के सभी कार्य- उत्पादन, वितरण, कर्मचारी प्रशाशन, शोध आदि वित्त पर निर्भर करते हैं। वित्तीय प्रबंधन इन सभी क्रियाओं के सफल संचालन का मुख्य आधार है। **प्रो. सोलोमन** के शब्दों में, "वित्तीय प्रबंध आज केवल कोषों के संग्रहण की एक विशिष्ट क्रिया ही नहीं है, अपितु संपूर्ण उपक्रम की सफलता का एक अंग बन गया है।"

7. **समन्वय की सहायक (Helpful in Coordination)**—वित्त विभाग का उपक्रम के सभी विभागों से गहन संबंध होता है। यह अन्य विभागों की विशेषताओं एवं सीमाओं का विश्लेषण करके सम्पूर्ण उपक्रम को एक समन्वित इकाई के रूप में बनाए रखता है।

8. **पूंजी निर्माण में सहायक (Helpful in Capital Formation)-** वित्तीय प्रबंध अपने विनियोग, लाभांश, संपत्ति व कोषों के एक प्रभावी उपयोग संबंधी निर्णय लेकर पूंजी निर्माण में सहायता प्राप्त करता है। वित्तीय प्रबंध की कुशल योजनाओं से फर्म की संपत्तियों एवं लाभ देयता में वृद्धि हो जाती है।

9. **विभिन्न वर्गों के हितों की पूर्ति (Fulfilment of the Interest of Different Groups)** वित्तीय प्रबंध केवल व्यवसायही नहीं वरन् इससे संबंधित सभी वर्गों के हितों की पूर्ति में सहायक होता हैं। यह उचित लाभांश, मजदूरी, ब्याज, मूल्य व कर आदि के वितरण को संभव बनाता है।

10. **राष्ट्रीय महत्त्व (National Importance)** राष्ट्र के आर्थिक योजनाओं, विकास कार्यक्रमों व सरकारी वित्तीय नीतियों की सफलता पूर्णतः वित्तीय प्रबंधन के सिद्धांतों पर निर्भर करती है।

11. **विनियोग निर्णय (Investment Decisions)** वित्तीय प्रबंध का ज्ञान भी नियोक्ताओं, अंश धारियों, वित्त संस्थाओं, अभिगोपकों, व्यापारिक बैंकों आदि को अपने विवेकपूर्ण विनियोग निर्णय लेने में सहायक होता हैं । इससे वे अपने धन की सुरक्षा कर सकते हैं तथा अधिकतम प्रत्याय प्राप्त कर सकते हैं।

12. **पूंजी संरचना के निर्धारण में सहायक (Helpful in Determining Capitak Structure)** प्रभावकारी वित्तीय प्रबंध के द्वारा पूँजी के विभिन्न स्रोतों तथा प्रतिभूतियों के उचित अनुपात

को निर्धारित किया जा सकता है। इससे न्यूनतम लागत पर कोषों की प्राप्ति की जा सकती है।

13. **लागत नियंत्रण करना (Controlling Cost)** वित्तीय प्रबंध उत्पादनों तथा विभिन्न कार्यों की लागतों का अध्ययन करके उनके प्रभाव निर्धारित करता है तथा उन्हें प्रमापों के अनुसार ही बनाए रखने का प्रयास करता है।

14. **मूल्य निर्धारण में योगदान (Contribution in Determining the Price)-** कुशल वित्तीय प्रबंधक उस प्रबंधकों तथा विपणन विभाग से संपर्क एवं विचार-विमर्श करके उत्पादों के उचित मूल्य निर्धारित करने में योगदान देते हैं।

15. **लाभों का पूर्वानुमान (Forecasting of profit)-- वित्तीय** प्रबंध लागत विश्लेषण, मूल्य निर्धारण, फर्म के विक्रय अनुमान आदि के द्वारा लाभों का पूर्वानुमान कर सकता है। इसी के आधार पर संस्था के भावी विकास, विस्तार एवं आधुनिकीकरण की योजनाएं बनायी जा सकती है।

16. **अन्य महत्वपूर्ण बिंदु--** वित्त प्रबंधक कई अन्य प्रकार पर संस्था के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होता हैं जैसे-- i. कोषों की आवश्यकता में योगदान, ii. को स्रोतों का निर्धारण, iii. कोषों का नियंत्रण करना, iv. तरल कोषों का प्रबंध करना एवं, v. संपत्तियों के प्रबंधन में योगदान आदि।

वित्त प्रबंधक की भूमिका

(Role of Financial Manager)

वित्त विभाग संपूर्ण संगठन ढांचे का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। वित्त प्रबंधक अपने विभाग का सर्वोच्च अधिकारी एवं कार्यकारी प्रमुख होता है। वह प्रत्यक्ष रुप से प्रबंध संचालक के नियंत्रण में कार्य करता है तथा अपने विभाग के कुशल संचालन के लिए उनके प्रति उत्तरदायी होता है। बड़ी एवं आधुनिक संस्थाओं में वित्त प्रबंधक को **वित्त नियंत्रक** के रूप में जाना जाता है । उपक्रम की संपूर्ण वित्तीय योजनाएं वित्त प्रबंधक के निर्देशन में तैयार एवं क्रियान्वित की जाती है। वित्त विभाग के बढ़ते हुए क्षेत्र के कारण वित्त प्रबंधक की भूमिका आज अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। एक उपक्रम में वित्त प्रबंधक की भूमिका निम्न रूप से बनती है:--

1- **उच्च स्तरीय रेखीय अधिकारी (Top Level Line Officer)--** वित्त प्रबंधक उच्च प्रबंध मंडल का एक महत्वपूर्ण सदस्य होता है, जो संस्था के अध्यक्ष के प्रति उत्तरदायी होता है। वह संगठन के रेखीय अधिकारी के रूप में वित्त विभाग के कार्यों का नियोजन, निर्देशन, समन्वय एवं नियंत्रण करता है। वह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्यों का पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण करता है तथा उनके निर्देशन एवं आदेश देता हैं।

2- **वित्तीय कार्य का विशेषज्ञ (Specialist of Finance Function)** वित्त प्रबंधक वित्त कार्य का विशेषज्ञ के होने के कारण संचालक मंडल को वित्तीय मामलों के परामर्श प्रदान करता है। वह विनियोग,पूंजी, लाभांश, बोनस, मूल्य निर्धारण, कर व दायित्व आदि से संबंधित सभी निर्णयों में अपनी दक्ष राय प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त लागत नियंत्रण, लाभ नियोजन, वित्तीय विश्लेषण, अंकेक्षण आदि मामलों में भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

3- **वित्त विभाग का कार्यात्मक अध्यक्ष (Functional Head of Finance Department)** वित्त प्रबंधक, वित्त विभाग का कार्यात्मक अध्यक्ष होता है। अतः वह अपने विभाग में के कुशल संचालन के लिए अनेक कार्य करता है। जैसे- कोषों की प्राप्ति एवं

आबंटन, वित्तीय नियोजन, बजट निर्माण, रोकड़ आय एवं प्रबंधन, लागत नियंत्रण, लेखाकर्म एवं अंकेक्षण, वित्तीय विश्लेषण आदि। वह अपने विभाग के कर्मचारियों को उचित निर्देशन एवं प्रेरणा प्रदान करता है।

4- **मार्गदर्शक एवं प्रतिनिधि (Guide and Representative)-** वित्त प्रबंधक अपने कर्मचारियों का मार्गदर्शक, प्रतिनिधि एवं संरक्षक होता है। वह वित्त कर्मचारियों की प्राप्ति, विकास, प्रशिक्षण एवं अनुरक्षण संबंधी कार्यों में सेविवर्गीय प्रबंधक को सहायता प्रदान करता है। वह वित्त कर्मचारियों की कार्य समस्याओं, कठिनाइयों व परिवेदनाओं को दूर करवाने के लिए प्रतिनिधि के रूप में उच्च प्रबंधकों से वार्तालाप करता है।

5- **समन्वयकर्ता (Co-ordinator) वित्त** सभी विभागों की क्रियाओं को आपस में जोड़ता है। वित्त प्रबंधक उत्पादन, विपणन, सेविवर्गीय शोध आदि विभागों के कार्यों में एक उचित सामंजस्य उत्पन्न करता है। वह कोषों के आबंटन, बजटन, वित्तीय नियोजन आदि के द्वारा इन विभागों की गतिविधियों को समन्वित करता है।

6- **कोषों का धरोहरकर्ता (Custodian of Funds)** वित्त प्रबंधक उपक्रम के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक कोषों को उपलब्ध कराता है, उनका उचित आवंटन करता है तथा उनके अधिकतम सदुपयोग एवं नियंत्रण के लिए दायी होता है। वह निरंतर उपक्रम की वित्तीय आवश्यकताओं का पूर्वानुमान करके उनकी पूर्ति का प्रबंध करता है। वस्तुतः वह अपनी संस्था का **कुबेर** होता है। वह सार्वजनिक धन-संपदा का धरोहरकर्ता भी होता है।

7- **विनियोक्ताओं का मार्गदर्शक एवं संरक्षक (Guide and Guardian of Investors)** वित्त प्रबंधक भी नियोजित पूंजी की रक्षा करके, उचित लाभांश का वितरण करके,

संपत्तियों के मूल्यों में वृद्धि करके तथा आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करके विनियोक्ताओं के हितों की रक्षा करता है। वह कोषों के दुरुपयोग को रोकता है तथा लाभदायक परियोजनाओं का निर्माण करता है।

8- **कर्मचारियों का हितैषी (Well-wisher of the Employees)** वित्त प्रबंधक अपने कर्मचारियों के हितों का सदैव ध्यान रखता है। वह कर्मचारियों को उचित वेतन, मजदूरी व बोनस का भुगतान करता है। कार्य की स्वास्थ्यप्रद दशाओं का निर्माण करता। कल्याणकारी योजनाओं का संचालन करता है तथा उनकी सुरक्षा के लिए पेंशन, ग्रेच्युटी, ऋण, आर्थिक सहायता आदि भुगतानों की व्यवस्था करता है।

9- **सरकार का प्रतिनिधि (Representative of Government)** वित्त प्रबंधक सरकारी कार्यों का अन्य दायित्वों का भुगतान करने तथा विभिन्न वित्तीय सूचनाओं को प्रदान करने के लिए दायी होती है। वह उपक्रम की समस्याओं को भी सरकार के सामने प्रस्तुत करता है। यह उसकी प्रतिनिधि भूमिका होती है।

10- **आर्थिक मूल्यांकनकर्ता (Economic Appraiser)** वित्त प्रबंधक उन राष्ट्रीय, आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों का मूल्यांकन भी करता है जो उपक्रम की प्रगति को अनुकूल या प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। वह सरकारी विकास कार्यक्रमों का सच्चा समीक्षक होता है।

वित्त प्रबंधक के कार्यों को बढ़ते हुए क्षेत्र के आधार पर उसकी भूमिका का अनुमान लगाया जा सकता है। वित्त प्रबंधक के प्रमुख कार्य निम्न प्रकार हैं:-

1) संस्था के **वित्तीय स्रोतों का अध्ययन** करना।

2) उच्च प्रबंध को **वित्तीय स्रोतों के चयन** में सहयोग प्रदान करना।

3) निश्चित अनुपात में **पूंजी की तरलता** बनाए रखना।

4) संस्था में **वित्तीय नियोजन** करना।

5) विभिन्न विभागों में **वित्तीय बजट** तैयार करवाना।

6) **पूंजी संरचना** के निर्धारण में उच्च प्रबंधकों या संचालक मंडल को सलाह देना।

7) **कर दायित्व** का अनुमान करना तथा **अग्रिम कर का भुगतान** करना।

8) संस्था की **कर विवरिणयाँ** तैयार करना।

9) संस्था में **आंतरिक अंकेक्षण** की व्यवस्था करना।

10) विविध अधिनियम के अंतर्गत प्रस्तुत की जाने वाली **सूचनाएं एवं रिपोर्ट** तैयार करवाना तथा उचित प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करना।

11) संस्था की **लाभांश नीति, विनियोग नीति** आदि तैयार करने में उच्च प्रबंधकों को सहायता करना।

12) संस्था की प्रगति की **सामयिक रिपोर्ट** उच्च प्रबंध को प्रस्तुत करना।

13) **वित्तीय कार्य- प्रणाली** का मूल्यांकन करना।

14) संस्था के लिए **वित्तीय नीतियों** का निर्धारण करना।

15) वित्त विभाग के कार्यों का निर्देशन एवं नियंत्रण करना।

वित्तीय अधिकारियों के दायित्व एवं कार्य

(Responsibilities and Functions of Finance Officers)

मुख्य वित्तीय प्रबंधक के कार्य

मुख्य वित्तीय प्रबंधक वित्त विभाग का सबसे उच्च अधिकारी होता है जो संस्था के समस्त वित्त कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है। वित्त विभाग के समस्त कार्य उसी के

निर्देशन एवं नियंत्रण में संपन्न किए जाते हैं। संक्षेप में, वित्त प्रबंधक निम्न कार्यों के लिए उत्तरदायी होता है:-

1) संस्था की वित्तीय प्रगति का प्रतिवेदन अध्यक्ष को प्रस्तुत करना।
2) दीर्घकालीन वित्तीय योजना एवं बजट का निर्माण करना।
3) संस्था के लेखों को तैयार करवाना एवं उनका पर्यवेक्षण करना।
4) संस्था में पर्याप्त वित्तीय साधनों की व्यवस्था करना।
5) संस्था में वित्तीय तरलता एवं लाभदायकता बनाए रखना।
6) कार्यशील पूंजी का प्रबंध करना।
7) लाभांश नीति पर सलाह देना। रोकड़ियो का पर्यवेक्षण करना।
8) संस्था के वित्तीय विवरण तैयार करवाना तथा उनका निर्वचन करना।
9) समस्त लेखों व विवरणों का अंकेक्षण करवाना।
10) उत्पादन के लागत लेखे तैयार करवाना।
11) वित्तीय अनुबंधों एवं पट्टों का रिकॉर्ड रखना।
12) वित्तीय पूर्वानुमान, विश्लेषण, निष्पत्ति मूल्यांकन।
13) चालू संपत्तियों का प्रबंध, पूंजी बजटन, विनियोजन।
14) वित्तीय प्रामापों व कार्यविधियों का निर्धारण।

कोषाध्यक्ष के कार्य (Functions of Treasurer)

कोषाध्यक्ष वित्तीय प्रबंधक के निर्देशन में निम्नलिखित कार्य करता है:-

1- वित्तीय नियोजन (Financial Planning)

I. उच्च प्रबंधकों को वित्तीय परिणामों की सूचना देना।
II. रोकड़ प्राप्तियों तथा भुगतानों का पूर्वानुमान करना।

III. लाभांश भुगतान के संबंध में परामर्श देना।

2- रोकड़ प्रबंध (Cash Management)

I. बैंकों में खाते खोलना तथा धन जमा करवाना।

II. रोकड़ राशियों व बैंक शेषों की व्यवस्था करना।

III. दायित्वों का उचित विधि द्वारा भुगतान करना।

IV. नगद सौदों का हिसाब-किताब रखना।

3- साख व उधार प्रबंध(Credit Management)

I. ग्राहकों की साख जोखिमों का निर्धारण करना।

II. वसूलियों का प्रबंध करना।

III. नगद छूटों तथा विक्रय शर्तों का निर्धारण करना।

4- प्रतिभूतियों का विक्रय(Sales of Securities)

I. संस्था की दीर्घकालीन देय क्षमता का निर्धारण करना।

II. विनियोग बैंकों से वार्तालाप करना।

III. सरकारी नियंत्रणों का पालन करना।

IV. बॉण्डों व स्टॉकों का भुगतान करना।

V. ऋणपत्रधारियों को ब्याज व स्टॉक होल्डर्स को लाभांश देना।

5- प्रपत्रों पर हस्ताक्षर करना।

6- कोषों व प्रतिभूतियों की सुरक्षा करना।

वित्त नियंत्रक के कार्य
(Functions of Finacial Controller)

वित्त नियंत्रक वित्तीय प्रबंधक के निर्देशन में निम्नलिखित कार्य करता है:--

1- **लेखांकन कार्य (Accounting Funtion)-** सामान्य लेखों, लागत लेखों तथा प्रबंधकीय लेखों की व्यवस्था करना। लेखों की विभिन्न प्रविधियों का निर्धारण करना।

2- **नियंत्रण के लिए योजना (Planning for control)** लाभ विनियोजन, पूंजीगत व्यव नियोजन आदि की व्यवस्था करना।

3- **मूल्यांकन (Appraisal)-** वास्तविक निष्पादनो की प्रमापित निष्पादनों से मूल्यांकन करना तथा विचलनों को ठीक करने के लिए सुधारात्मक कार्यवाही करना।

4- **कर प्रशासन (Tex Administration)-** विभिन्न करों के भुगतान, रिटर्न भरने तथा कर- निर्धारण का कार्य करना ।

5- **अंकेक्षण(Audit)-** आंतरिक अंकेक्षण की व्यवस्था करना।

6- **सूचनाएं भिजवाना(To Remit Informations)-** विभिन्न कानूनों के अंतर्गत सरकार, पूंजी नियंत्रण, कंपनी रजिस्ट्रार, उद्योग निदेशक, आयकर कमिश्नर को विभिन्न प्रलेख एवं सूचनाएं भिजवाना।

भारतीय शिक्षा वित्त की समस्याएँ
(Problems of Indian Education Finance)

Hkkjrh; f”k{kk foRr dh leL;k,a dksbZ ubZ leL;k,a ugha gSaA fczfV”k dkyhu f”k{kk ls ysdj Lora=rk izkfIr rd

f”k{kk&foRr dh vusd ,slh leL;k,a Fkh] ftuls f”k{kk fodkl esa ck/kk mRiUu gksrh vkbZ gSA Lora=rk izkfIr ds ckn ns”k dh vko”;drkvksa ,oa ifjfLFkfr;ksa ds vk/kkj ij f”k{kk&foRr dh leL;kvksa dk fujkdj.k djus dk iz;kl fd;k x;kA fdUrq fQj Hkh orZeku fLFkfr esa Hkkjrh; f”k{kk&foRr dh leL;k,a fuEukuqlkj gS&

1- **f'k{kk vk;ksx¼1964&66½** ds vuqlkj vxys 20 o'kksZa esa Hkkjr esa f”k{kk dh ekax esa i;kZIr o`f) gksxh vkSj mlds O;k; dk Hkkj mBkus gsrq i;kZIr /ku tqVkuk gksxkA ns”k dh crZeku vkfFkZd fLFkfr dks ns[krs gq, Hkfo'; esa f”k{kk dh izxfr gsrq /ku dh O;oLFkk djuk ,d xaHkhj leL;k gSA ;fn Hkkoh vkfFkZd ladV dks टालने dk iz;kl ugha fd;k x;k rks Hkfo'; esa ns”k dh “kSf{kd izxfr esa ck/kk mRiUu gksus dh iwjh laHkkouk cuh jgsxhA
2- ns”k esa vusd ;kstuk,a fodkl dh n`f'V ls cukbZ tk jgh gSA iapo'khZ; ;kstukvksa ds varxZr “kSf{kd izxfr gsrq Hkh vusd ;kstuk,a dk;kZfUor gks jgh gS। fdUrq bu ;kstukvksa ds vk/kkj ij ns”k esa izxfr rHkh gks ldrh gS tc muds fy,

mfPkr /ku dh O;oLFkk gksA /kukHkko ds dkj.k vPNh&ls&vPNh “kSf{kd ;kstukvksa ds foQy gksus dh laHkkouk cuh jgrh gSA

3- fiNys o’kksaZ dh rqyuk es aHkkjr eas fofHkUu oLrqvksa dh dhers dkQh c<+ pqdh gS ftldk izHkko f”k{kk ij Hkh iM+ jgk gSA vc f”k{kk Hkh igys dh rqyuk esa eagxh gksrh tk jgh gSA f”k{kk ij dqy O;; ds :i eas gksus okys /ku dh ek=k esa o`f) gks jgh gS ftlls “kSf{kd ;kstukvksa esa lQyrk izkIr gksuk ,d leL;k cuh gqbZ gSA

4- ns”k dh c<+rh gqbZ tula[;k yksdra= dk fodkl rFkk vkfFkZd ;kstukvksa ds dkj.k f”k{kk dh ekax esa rsth jgh gS] fdUrq ns”k dh orZeku foRr O;oLFkk bl ekax dks iwjk djus esa leFkZ ugha gSA vr% f”k{kk&foRr dh O;oLFkk ,d dfBu leL;k dk :i /kkj.k fd, gq, gSA

5- Hkkjr ds jk’Vªh; ctV dk 10 izfr”kr rFkk jkT; ljdkjksa }kjk vius&vius cTkV ds 20&25 izfr”kr rd f”k{kk dk O;; fd;k tk jgk gSA tks nwljs ns”kksa dh rqyuk esa cgqr de /kujkf”k

gSA vr% ctV esa f”k{kk O;; gsrq /kujkf”k c<+kus dh leL;k vHkh rd gy ugha gks ldh gSA

6- f”k{kk&foRr ds vHkko esaa fofHkUu leL;kvksa esa pyus okys fofHkUu “kSf{kd xfrfof/k;ksa esa vojks/k mRiUu gks jgk gSA

7- f”k{kk&foRr ds vHkko esa izkFkfed] ek/;fed rFkk mPp f”k{kk ds e/; mfpr larqyu cuk,a j[kuk Hkh ,d leL;k gSA f”k{kk ds mi;qDr rhu Lrjksa ds e/; mfpr larqyu cuk,a j[kus gsrq i;kZIr /kujkf”k dh vko”;drk gSA

8- orZeku fLFkfr esa dsoy Nk=&Nk=kvksa dks NksaM+dj fo|ky;ksa esa mfpr Hkouksa] miLdj] midj.kksa] lkexzh] iz;ksx”kkykvksa] iqLrdky;ksa rFkk ;ksX; f”k{kdksa dk vHkko cuk gqvk gSA mi;qZDr lHkh dk vHkko gksssus dk ,dek= dkj.k fo|ky;ksa dh foRrh; O;oLFkk dk nqyZHk gksuk gSA

9- ns”k dh vkS|ksfxd izxfr dks /;ku esa j[kdj vusd vkS|ksfxd leL;k,a rFkk dk;Zdze pyk, tk jgs gSa ftuds lQy :i ls lapkyu djus gsrq i;kZIr /ku dh vko”;drk gSA /ku dh O;oLFkk ds

vHkko esa vkS|ksfxd f”k{kk esa fdlh izdkj dh izxfr djus dh vk”kk djuk O;FkZ gSA

10- f”k{kk ij fd, x, O;; dk tks ykHk f”k{kkfFkZ;kas dks vFkok Hkkjrh; turk dks feyuk pkfg, og ugha fey ik jgk gSA dHkh&dHkh foRrh; O;oLFkk ds vk/kkj ij O;; laca/kh enksa dk fu/kkZj.k mfpr izdkj ls ugha fd;k tkrk gSA ftlls f”k{kk ds vusd igyqvksa dk leqfpr fodkl ugha gks ikrk gSA

11- dksBkjh vk;ksx ds vuqlkj “kSf{kd foRr dk f”k{kk ij mfpr iz;ksx ugha gks jgk gSA f”k{kk&O;; esa ferO;f;rk ykuk rFkk vusd {ks=ksa esa viO;; dks jksduk Hkh ,d leL;k cuh gqbZ gSA

12- “kSf{kd fu;kstu dk ns”k dh ekuoh; vko”;drkvksa ds vuq:i u gksus ls ”kSf{kd /ku dk Hkh lgh LFkku ij lgh rjhds ls mi;ksx u gksus dh leL;k mUiUu gks jgh gSA

13- f”k{kk&iz”kklu esa vfLFkjrk gksus rFkk f”k{kk ds fofHkUu Lrjksa ds “kSf{kd iz”kklu esa lg&laca/k u gksus ls Hkh “kSf{kd foRr dk viO;; gks jgk gSA

14- Hkkjrh; f”k{kk&iz.kkyh dk v/;;u djus ls fofnr gksrk gS fd LFkkuh; lk/kuksa }kjk f”k{kk ij cgqr de O;; gks jgk gSA dsUnz rFkk jkT; dh ljdkjsa f”k{kk dk O;;&Hkkj vf/kd mBk jgh gSA vr% LFkkuh; lk/kuksa dks “kSf{kd O;; gsrq izsfjr djus dh leL;k orZeku le; esa egRoiw.kZ leL;k gSA

15- Hkkjr esa “kSf{kd foRr dk izeq[k Jksr vuqnku iz.kkyh cuh gqbZ gSA oS;fDrd iz;kl “kSf{kd&foRr dh vksj ls foeq[k gksrs tk jgs gSaaA vejhdk rFkk baXySaM tSls le`) ns”kksa esa “kSf{kd foRr gsrq futh iz;klksa dk ;ksxnku ljkguh; jgrk gSA tcfd gekjs ns”k esa bl vksj dkQh mnklhurk NkbZ gqbZ gSA bl n`f’V ls gekjs ns”k esa “kSf{kd&foRr dks tqVkus gsrq futh iz;klksa dks vf/kdkf/kd izsfjr djus dh leL;k Hkh dqN de xaHkhj leL;k ugha gSA

Hkkjrh; f’k{kk&foRr dh leL;kvksa ds fujkdj.k gsrq dqN lq>ko

(Suggestions for Removing Problems of Indian Education Financing)

“kSf{kd izxfr gsrq ;fn gesa dksbZ lfdz; iz;kl djuk gS rks loZizFke gesa “kSf{kd&foRr dh leL;kvksa ds fujkdj.k djus gsrq mik; <w< fudkyuk gksxk ftlls “kSf{kd izxfr esa fdlh izdkj dh ck/kk mRiUu uk gksA Hkkjrh; f”k{kk&foRr dh leL;kvksa ds fujkdj.k gsrq dqN izeq[k lq>ko v/kksfyf[kr gS &

1- dsUnzh; rFkk jkT;&ljdkjksa dks dqN “kSf{kd O;; dk 90 izfr”kr O;; dk Hkkj ogu djuk pkfg,A “ks’k 10 izfr”kr O;; dh iwfrZ] 3 izfr”kr “kqYd }kjk] 4 izfr”kr LFkkuh; laLFkkvksa }kjk rFkk 3 izfr”kr pank }kjk gksuh pkfg,A

2- dsUnzh; ljdkj dks pkfg, dh og jkT;ksa dks nh tkus okyh foRrh; lgk;rk dk rFkk jkT; ljdkjksa }kjk f”k{kk ij O;; djus dh

{kerk dk ewY;kadu djsa vkSj mlh ds vuqlkj jkT;&fo"ks'k gsrq "kSf{kd foRr dh O;oLFkk djus dh iz;kl djsaA

3- Hkkjr esa fofHkUu ?kkfeZd lEiznk; gSaA /kkkfeZd lEiznk; ds ikl izpqj ek=k esa /ku gSA ;fn /kkfeZd laLFkkvksa ds ikl ,df=r /ku dk mi;ksx f"k{kk esa fd;k tkosa rks "kSf{kd foRr esa lq/kkj ljyrk ls gks ldsxkA

4- izR;sd jkT; esa jkT; Lrj dh f"k{kk lykgdkj lfefr rFkk ftys esa ftyk Lrj dh f"k{kk lykgdkj lfefr dk fuekZ.k fd;k tk;sA bu lfefr;ksa dk izeq[k dk;Z f"k{kk {ks= esa dk;Z djus okyh fofHkUu lfefr;ksa ds vkfFkZd iz;klksa] dk;ksaZ] xfrfof/k;ksa vkfn esa leUo; mRiUu djuk] mUgas usr`Ro iznku djuk gksuk pkfg,A

5- f"k{kk foRr dk viO;; jksduk orZeku ifjfLFkfr;ksa esa cgqr vko";d gSSA f"k{kk vk;ksx ¼1964&66½ ds vuqlkj] Hkkjr esa "kSf{kd foRr dk viO;; i;kZIr ek=k esa gks jgk gSA bl n`f'V ls "kkyk&Hkouksa] midj.kksa] lkexzh vkfn dk vf/kdkf/kd mi;ksx gksuk pkfg,A fo|ky; dh dk;Ziz.kkyh esa] fo|ky; dh le;&pdz esa rFkk fo|ky; yxus okys fnuksa esa o`f)

djuk vko";d gS ftlls O;; gksus okys /ku ls vf/kdkf/kd "kSf{kd ykHk gks ldsaA

6- ;fn f"k{kk foRr dks "kSf{kd&Lrjksa ds vk/kkj ij foHkkftr fd;k tkosa rks izkFkfed f"k{kk O;; dk vf/kdkf/kd izfr"kr LFkkuh; laLFkkvksa dks] ek/;fed f"k{kk O;; ij vR;f/kd Hkkj jkT;&ljdkj dks rFkk mPp rduhdh ,oa "kks/k laca/kh f"k{kk O;; dk vR;f/kd izfr"kr dsUnzh; ljdkj dks iwjk djuk pkfg,A

7- ns"k dh c<+rh gqbZ tula[;k ,oa fuj{kjrk ij dkcw ikus ls Hkh vusd foRrh; Lo;a gh lqy> tkosaxhA vr% bl n`f"V ls ljdkj dks gh ugha oju~ O;fDrxr iz;klksa dks Hkh tula[;k dks de djus rFkk fuj{kjrk mUewyu vkUnksyu esa lfdz; :i ls Hkkx ysuk pkfg,A

8- vuqnku ds fu;eksa es ifjorZu fd;k tkuk pkfg, rkfd misf{kr oxksZa] {ks=ksa ,oa laLFkkvksa dh "kSf{kd izxfr gsrq vf/kd vuqnku nsus ij cy fn;k tkuk pkfg,A jkT; esa "kSf{kd izxfr gsrq dsUnzh; ljdkj dks jkT; ljdkjksa dks LFkkuh; ljdkjksa dh rqyuk esa vf/kd /ku vuqnku ds :i esa fn;k tkuk pkfg,A

9- ;fn ges “kSf{kd foRr ls vf/kdkf/kd ykHk mBkuk gS rks “kks/k dk;ksZa] foKku ,oa rduhdh f”k{kk dk fodkl djuk gS rks] “kSf{kd foRr dh ek=k mi;ZqDr {ks+=ksa esa vf/kd c<+kuk pkfg,A

10- jkT;ksa es dk;Z djus okys ek/;fed f”k{kk e.Myksa rFkk fo”ofo|ky;ksa ds ikl Lo;a ds izsl gksa ftlls os vko”;d iqLrdksa dk izdk”ku djds o LVs”kujh Nkidj “Skf{kd O;; esa deh dj ldsa rFkk izsl ds ek/;e ls vfrfjDr vk; esa Hkh o`f) dj ldsaA ,slk djus ls dsUnz ,oa jkT;ksa ij vuqnku nsus dk Hkh Hkkj dqN gYdk gks ldrk gSA

11- ns”k esa de jkf”k ls fo|ky;ksa dh vko”;drkvksa dk iwfrZ djus gsrq] midj.kksa ,oa lkefxz;ksa dks lLrs nkeksa esa rS;kj djus gsrq rFkk fo|ky; Hkou ,oa iz;ksx”kkykvksa dks lLrs :i ls rS;kj djus gsrq uohu “kks/k dk;Z djus pkfg,A bl izdkj ds “kks/k ls “kSf{kd O;; de vk; esa gh iwjs fd;s tk ldsaxsA

12- LFkkuh; lk/kuksa dh ykHk vf/kdkf/kd mBk;k tkosA iz”kkldksa ds pkfg, fd LFkkuh; lk/kuksa dks izksRlkfgr djsa

vkSj mudk mi;ksx “kkyk Hkouksa ds fuekZ.k esa rFkk midj.ksa dks rS;kj djus esa djsaA LFkkuh; L=ksrksa dks fodflr djds jkT; ,oa dsUnzh; ljdkj ij iM+us okys foRrh; Hkkj esa deh dh tk ldrh gSA

13- f”k{kk&foRr dh O;oLFkk gsrq f”k{kk dj Hkh yxk;k tk ldrk gS fdUrq Hkkjr tSls “kSf{kd n`f’V ls fiNM+s ns”k esa f”k{kk dj dh ek=k de gh j[kh tkuh pkfg,A

14- f”k{kk&foRr dh O;oLFkk gsrq f”k{kk laLFkkuksa dks dtZ esa Hkh fn;k tk ldrk gSA vejhdk ,oa feJ esa dtZ }kjk “kkyk Hkou fuekZ.k gsrq foRr tqVk;k tkrk gSA Hkkjr esa Hkh dtZ dh O;oLFkk djds vusd “kSf{kd laLFkkuksa dks foRrh; lgk;rk igaqpk;h tk ldrh gSA

15- f”k{kk ds fy, ykVjh dk mi;ksx Hkh fd;k tk ldrk gSA bl laca/k esa jkT; ljdkjksa dks pkfg, dh os vius izns”k esa [kqyus okyh ykVjh esa ls /ku dk dqN izfr”kr f”k{kk ds uke ls dkVdj ykVjh [kqyus okys dks fu/kZfjr jkf”k dk Hkqxrku djsaA

-----------------------00---------------------------